संस्कृत

ग्रं. नं. ३२

स्तोत्र नामावळि

काली सहस्त्रनाम

६७९/स्तो. २९५

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(1)

प

का॰स॰ ॥श्री गणेशाय नमः ॥ ईश्वर उवाचः ॥ कथितो यं महामंत्रैः सर्वमंत्रोत्त
॥१॥ मोत्तमः ॥ यमासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमं ॥१॥ संयुक्तः परया भक्त्या
यथोक्तविधिना भवान् ॥ कुरुतामार्चनं देव्या स्त्रैलोक्यविजिगीषया ॥२॥
श्रीपरशुराम उवाच ॥ प्रसन्नो यदि मे देव परमेश पुरातन ॥ रहस्यं प
रमं देव्याः कृपया कथय प्रभो ॥३॥ विना चार्चनं विना होमं विना न्यासं विना
बलिं ॥ विना गंधं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियां ॥४॥ प्राणायामं विना
ध्यानं विना भूतविशोधनं ॥ विना जपं विना ज्ञानं केन कालीं प्रसिद्यति
५ ॥श्री ईश्वर उवाचः ॥ श्रणु त्वं मुत्तम प्राज्ञ भृगुवंशसमुद्भव ॥ भक्त्या का
नामपि भक्तोसि त्वमेव साधयिष्यसि ॥६॥ देवीं दानवकोटिघ्नीं कालि ॥२॥

सो ४

२(A) कां रुधिरप्रियां सदा स्तोत्रप्रिया मुग्रां कामकौतुकलालसां ॥७॥ सर्वदा
२९ नंदहृदया मासवासक्तमानसां ॥ मत्स्यमांसानुरागिणीं तां देवी रुधिरं प्री
यां ॥८॥ स्मशानवासिनी प्रेतगणनृत्यमहोत्सवां ॥ योगप्रभावां योगेशीं यो
गीद्रहृदयस्थितां ॥९॥ तामुग्रकालिकां रामप्रसादयितुमर्हसि ॥ तस्याः
तं ५ स्तोत्रं महापुन्यं स्वयं कात्यायनीकृतं ॥१०॥ तत्वैत्कथयिष्यामि श्रृणुव ७५
त्सावधारय ॥ गोप्तिनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परं ॥११॥ यस्यैककाल
पठनात्सर्वे विघ्नाः समाकुलाः ॥ नश्यंति दहने दिप्ते पतंगा इव सर्वशः ॥१२
शीरं ॥ निसिथे मुक्तकेशस्तु नग्नः शक्तिसमन्वितः मनसा चिंतितेनू कालीं महा ये ली
कालेन लालितां ॥१३॥ पठेत्सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनं ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(2)

का०स ॥२॥

प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकंपतो ॥१४॥ यथा ब्रह्मामृतैर्ब्रह्मकुसु
मै रचिता परा ॥ प्रसीदति तथानेन स्तुता कालि प्रसीदति ॥१५॥ स्मशाने य
षितं नीत्वा पुष्पैरर्कैः सहस्रशः ॥ तांतमन्यच्ये कालीं च सर्वां सिद्धिं च विंद
ति ॥ धनवान्बलवान्वाग्मी सर्वयोषित्प्रियः सुखी ॥ जपेन नात्र संदेहो म
हाकालीवचो यथा ॥१७॥ ॐ अस्य श्रीदक्षिणाकालीसहस्रनामस्तोत्रमं
त्रस्य महाकालभैरव ऋषिः ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ श्रीमहाकाली देवता ॥ क्लीं बी
जं ॥ हूं शक्तिः ॥ क्रीं किलकं ॥ श्रीमहाकालीप्रीत्यर्थे कालीसहस्रनामस्तोत्र
मंत्रजपे विनियोगः ॥ ॐ स्मसानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी ॥
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥१॥ कालिका कालरात्रिश्च ॥२॥

(2A)

महाकालनितंबिनी॥ कालभैरवसेव्या च कुलवर्त्मप्रकासिनी॥ कामम
दा कामिनी काम्या कमनीयस्वभाविनी॥ कस्तूरीरसिनी काली कुंजरे
श्वरगामिनी॥ ३॥ ककारवर्णसर्वांगी काकिनी कामसुंदरी॥ कामार्ता कामरूपा
च कामधेनुः कलावती॥ कांता कालस्वरूपा च कामाक्षी कूलपालिनी॥ कूलीना
कूलवत्यंबा दुर्गा दुर्गतिनासिनी॥ ४॥ कौमारी कूलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशो
दरी॥ कृशांगी कुलिशांगी च क्रींकारी कमला कला॥ ५॥ करालास्या कराली च
कुलकांतापराजिता॥ उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महामना॥ ६॥ नीला
घना मेघनादा मात्रा मुद्रा मितामिता॥ ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भ
क्तवत्सला॥ ७॥ माहेश्वरी च चामुंडा वाराही नारसिंहिका॥ वज्रांगी वज्रकंका

(3)

का॰स॰
॥२॥

लीनमुंडस्रग्विणी शिवा ॥ ८ ॥ मालिनी नरमुंडाली गलद्रक्तविभूषणा ॥ रक्त
चंदनसिक्तांगी सिंदूरारुणमस्तका ॥ ९ ॥ घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शु
भा ॥ महादंष्ट्रा महामाया सुदती युगदंतुरा ॥ १० ॥ सुलोचना विरूपाक्षी विशा
लाक्षी त्रिलोचना ॥ शारदेंदुप्रसन्नास्या स्फुरत्स्मेरांबुजेक्षणा ॥ ११ ॥ अट्टहा
साप्रसन्नास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी ॥ प्रसन्नपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषि
णी ॥ १२ ॥ कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी ॥ १३ ॥ सुमतिः कुमतिश्चंडा चं
डमुंडातिवेगिनी ॥ प्रचंडा चंडिका चंडी चर्चिका चंडवेगिनी ॥ १४ ॥ सुकेशी मुक्त
केशी च दीर्घकेशी महाकचा ॥ प्रेतदेहकर्णपूरा प्रेतपाणिसुमेखला ॥ १५ ॥ प्रेता
सना प्रियप्रेता प्रेतभूमिकृतालया ॥ श्मशानवासिनी पुण्या पुण्यदा कुलपंडि ॥२

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(3A) ता॥१५॥पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पाविनी॥पूता पवित्रा परमा पु
ण्या पुन्य विभूषणा॥१६॥पुन्य नाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाणिनि॥नृमुंडहस्ता
शस्त्रा च छिंन्नमस्ता सुनासिका॥१७॥दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नत
स्तनी॥दिगंबरा घोररूपा स्त्रक्रुगंता रक्तवाहिनी॥१८॥घोरा वा शिवा संगानी: २४
स्संगा मदनातुरा॥मत्ता प्रमत्ता प्रमदा सुधासिंधुनिवासिनी॥१९॥अतिमत्ता
महामत्ता सर्वाकर्षिणी कारिणी॥गीतिप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्यपरायणा॥२०
॥चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा॥कात्यायनी जगन्माता जगतां परमे
श्वरी॥२१॥जगद्बंधु जगद्धात्री जगदानंदकारिणी॥जगज्जीवमयी हैमवती माया
महोदया नागयज्ञोपवीतांगी नागिनी नागशायिनी॥नागकंन्या देवकन्या

गी

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

(५)

॥ का॰ स॰

॥ ४ ॥

गंधर्वी किंन्नरीश्वरी ॥ २३ ॥ मोहरात्रिर्महारात्री दारुणा चासुरासुरी ॥ विद्याध
रीवसुमती यक्षिणी योगिनी जरा ॥ २४ ॥ राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा
॥ श्रुतिस्मृतिर्महाविद्या गुह्यविद्या पुरातना ॥ २५ ॥ चिंत्याचिंत्या स्वधा स्वाहा नि
द्रा तंद्रा च पार्वतीति ॥ अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्या तपस्विनी ॥ गंगा काशी
सची सीता सती सत्यपरायणा ॥ २६ ॥ नीतीः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टीः पुष्टिर्धृतिः
क्षमा ॥ वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीर्नीलसरस्वती ॥ २७ ॥ स्त्रोतस्विनी शावयु ति
ता मातंगी विजया जया ॥ नदी सिंधुः सर्वमयी तारा शून्यनिवासिनी ॥ २८ ॥ शु
द्धा तरंगिणी मेधा कालिनी बहुरूपिणी ॥ स्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा भगवत
नुरूपिणी ॥ २९ ॥ परमाणुस्वरूपा च चिदानंदस्वरूपिणी ॥ सुनंदा नंदिनी ॥ ४ ॥

(५A)

स्तुत्यास्तवनीयस्वभाविनी ॥ २० ॥ सदानंदमयिसत्यासर्वानंदस्वरूपिनी
॥ रंकिणी टंकिनी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी ॥ पद्मापद्मालयापद्मामुखिप
द्मविभूषणा ॥ २१ ॥ हासिनीडाकिनीशांतीर्डाकिनिरूधिरप्रीया ॥ भ्रांतिर्भ
८५। वानिरूद्राणीमृडानीशत्रुनाशीनी ॥ २२ ॥ उपेंद्राणीमहेश्वानीज्योत्स्नाचंद्र
स्वरूपीणी ॥ सूर्यात्मिकारुद्रपत्नीरौद्रीस्त्रीप्रकृतिःपुमान् ॥ २३ ॥ शक्तिःसू
४ मीता क्ष्मीमतीर्[redacted] ॥ सर्वेश्वरीसर्वमातासर्वाणीसर्वमंगला ॥ २४ ॥ सर्वे
शासिद्धिदासिद्धाख्यास्वरूपापद्मा ॥ कर्त्रीहर्त्रीपालयित्रीशर्वरीतामसीद
या ॥ २५ ॥ तमिस्त्रायामिनीस्थाणुःस्थिराधीरामनस्विनी ॥ चार्वंगीचंचला
लोलजिह्वाचारुचरित्रिणी ॥ २६ ॥ त्रपात्रपावतीलज्जानिर्लज्जाह्रीरजो

भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता ४

श्री १

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(5)
का० स०
॥ ५ ॥
५त्रि

मयी ॥ सत्ववती धर्मे निष्ठाश्रेष्ठा निष्ठुरनादिनी ॥ ३७ ॥ गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री
विशिष्टा श्रेयसी घृणा ॥ भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती ॥ ३८
॥ वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुःप्रिया ॥ ऋक्सामाथर्वनिलया रा
गिणी शोभनस्वरा ॥ ३९ ॥ कलकंठी कंबुकंठी वेणुवीणापरायणा ॥ वि
शिणी वैष्णवी स्वच्छा धात्री जगदीश्वरी ॥ ४० ॥ मधुमती कुंडलिनी ऋ
द्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता ॥ रंभोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती मघा ॥ ४१ ॥ शंखि
नी चक्रिणी खड्गाक्रंदिनी पद्मिनी तथा ॥ शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शा
र्ङ्गपाणिनी ॥ ४२ ॥ पिनाकधारिणी धूम्राशारत्कुमुदशालिनी ॥ रथिनी स
मरप्रीता वेगिनी रणपंडिता ॥ ४३ ॥ जटिनी वज्रिणी नीला लावण्यांबुधिचं ॥ ५

गा३

(5A)

डिका ॥ बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येंद्रमंथिनी ॥ ४४ ॥ महिषासुरहंत्री च
चामुंडा रक्तदंतिका ॥ रक्तपा रुधिराक्तांगी रक्तपा रुधिराक्तांगी रक्तखर्परह
स्तिनी ॥ ४५ ॥ रक्तप्रिया मांसरुधिरासवासक्तमानसा ॥ गलच्छोणितमुंडा
लिकंठमाला विभूषणा ॥ ४६ ॥ शवासना चिंतांतस्था माहेशी वृषवाहि
नी ॥ व्याघ्रत्वगंबरा चिंतायोगि[illegible]हवाहिनी ॥ ४७ ॥ वामदेवी महादेवी
गौरी सर्वज्ञभाविनी ॥ बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा ॥ ४८ ॥
सुभ्रु विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ॥ स्वप्नावती चित्रलेखा लो
पामुद्रा सुरेश्वरी ॥ ४९ ॥ अमोघारुंधती तीक्ष्णा भगवत्यनुरागिनी ॥ मंद
किनी मंदहासा ज्वालामुख्यसुरांतका ॥ ५० ॥ मानदा मानिनी मान्या

(6)

का० स०
॥ ६ ॥

माननी यामदोद्धता ॥ मदिरारमदिरोन्मत्ता मेध्या साध्यत्र साधिनी ॥
५१ ॥ सुमध्या नंदगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ॥ जयदा जित्वरा जैत्री
जयश्रीर्जयशालिनी ॥ ५२ ॥ सुखदा [illegible] सदा सत्या सत्वसंक्षोभकारिणी
॥ श्रीवद्भूतीत्कृतिमतीविभूति [illegible] नना ॥ ५३ ॥ कुमारी कुलजा कुंती
कुलस्त्री कुलदीपिका ॥ कीर्तिर्य[illegible]स्विनी भूषा भूष्या भूतपतिप्रिया
॥ ५४ ॥ सगुणा निर्गुणा धृष्टा [illegible] निष्ठा प्रतिष्ठिता ॥ धनिष्ठा धनदा
धन्या वसुधा स्वप्रकाशिनी ॥ ५५ ॥ गुर्वी गुरुतरा श्रेष्ठा सद्गुणा निर्गुणा
त्मिका ॥ महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीविनी ॥ ५६ ॥ कामदेवक
लारामा शिवनर्तकी चिंतामणिः कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ॥ ५७ ॥ ॥ ६ ॥

श्रीरामा

(6A)

कार्तिकीर्कृत्तिका कृत्या अयोध्या विषमासमा ॥ सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्ला
दिनी क्लेशनाशिनी ॥ ५८ ॥ त्रैलोक्यजननी तुष्टा निर्मलाश्यामरूपिणी ॥
तडागनिम्नजठरा शुष्कमांसास्थिमालिनी ॥ ५९ ॥ अवंती मथुरायोध्या त्रैलो
क्यपावनीश्वरी ॥ व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्तिः शर्वरी भीमनादिनी ॥ ६० ॥ क्षेमक
री च सर्वसंमोहकारिणी ॥ ऊर्ध्वतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा ॥ शंकरी
६१ ॥ अद्वैता योगिनी पूज्या सुरभिः सर्वमंगला ॥ सर्वप्रियंकरी भोग्या धा
रिणी पिशिताशना ॥ ६२ ॥ भयंकरी पापहरा निष्कलंका वशंकरी ॥ आशा तृ
ष्णा चंद्रकला निद्राणा वायुवेगिनी ॥ ६३ ॥ सहस्रसूर्यसंकाशा चंद्रकोटि
समप्रभा ॥ निशुंभशुंभहंत्री च रक्तबीजविनाशिनी ॥ वह्निमंडलमध्यस्था
मधुदैत्येंद्रहंत्री च दुर्गासुरविनाशिनी ॥

joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

का०स० ॥७॥

सर्वे सत्वप्रतिष्ठिता ॥ ६४ ॥ सर्वाचारवती सर्वा देवकन्याधिदेवता ॥ दक्षकन्याद
क्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिनी ॥ ६५ ॥ इज्या पूज्या विभिर्भूतीः सत्कीर्तिर्ब्रह्मरूपिणी ॥
रंभोरू श्चतुराकारा जयंती करुणा कुहु ॥ ६६ ॥ तपस्विनी वेदमाता यशस्वी ब्रह्मचारि
णी ॥ प्रत्यया खेचरी धैर्या तुरीया [illegible] तुरीं ॥ जगन्ना वारुणि छाया शशिनी
विस्फूलिंगिनी ॥ सिद्धिदा बुद्धिदा [illegible]ः सर्वाद्या सर्वदायिणी ॥ ६७ ॥ अगाधरूपिणी
ध्याया मूलाधारनिवासिनी ॥ आ[illegible]शा पूर्णमनाश्चंद्रमुख्यनुकूलिनी ॥
६९ ॥ वावदूका निम्ननाभिः सत्यसंध्या दृढव्रता ॥ आन्वीक्षिकी दंडनीतिस्त्र
यी त्रिदिवसुंदरी ॥ ६९ ॥ ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतापिनी विंध्यवासिनी ॥ तुष्टि
सिद्धिः सदाप्राप्तीः प्राकाम्या महिमा णिमा ॥ ७१ ॥ इच्छा शक्तिर्वशित्वा च ॥८॥

(७अ)

इसित्वोर्ध्वनिवासिनी ॥ लघीमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी ॥ ७१ ॥
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा ॥ पिंगला कपिला जिव्हारस
ज्ञा रसना रसाः ॥ ७२ ॥ सुषुम्नेडा योगवती गांधारी नवचंडिका पांचाली
रूक्मिणी राधाराध्या भामा राधिका [illegible] विका ॥ अमृता तुलसी वृंदा कैटभी क
पटेश्वरी ॥ उग्रा चंडेश्वरी वीरजननी वीरसुंदरी ॥ ७४ ॥ उग्रतारा यशोदा
ख्या देवकी देवमानिता ॥ निरंजना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका ॥
७५ ॥ कुलवागीश्वरी ज्वाला मातृका द्राविणी द्रवा ॥ योगेश्वरी महामारी
भ्रामरी बिंदुरूपिनी ॥ ७६ ॥ दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला डामरी प्रभा ॥ कुब्जि
का ज्ञानीनी ज्येष्ठा भुशुंडी प्रकटाकृतिः ॥ ७७ ॥ द्राविणी योगिनी माया काम

॥का॰स॰ ८॥ विजेश्वरी क्रिया ॥ ७८ ॥ श्रीकंठनरी कोकनदा कुशाला शांति लोत्तमा ॥ अ
मेयविक्रमा क्रूरा सम्यक्शीला त्रिविक्रमा ॥ ७९ ॥ स्वस्ति हव्यवहा प्री
ति रूष्मा धूम्रार्चिरंगदा ॥ तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा ॥ ८० ॥
त्रिखंडा बोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी ॥ बीजरूपा महामुद्रा वशि
नी योगरूपिणी ॥ ८१ ॥ अनंगकुसुमानंगमेखलानंगरूपिणी ॥ अनंगम
दनानंग ~~मेखलानंगरूपिणी~~ ॥ ८२ ॥ अनंगमालिनी कामेश्वरी सर्वार्थसा
धिका ॥ सर्वमंत्रमयी मेदिन्यरूपानंगरूपिनी ॥ ८३ ॥ वज्रेश्वरी वज्रयी
नी सर्वद्वंद्वक्षयंकरी ॥ षडंगयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी ॥ ८४ ॥
दुराशया दुराराध्या दुर्जया दुर्गरूपिणी ॥ दुरंता दुष्कृतिहरा दुर्जेया दुरि ॥८॥

ति क्रमा ॥ ८५ ॥ हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकंभर्यनुकंपिनी ॥ त्रिकोण
निलया नित्या परमामृतरंजिनी ॥ ८६ ॥ महाविद्येश्वरीश्वेता भेरुंडा कु
लसुंदरी ॥ त्वरीता शक्तिसंयुक्ता शक्तिवश्यासनातनी ॥ ८७ ॥ शक्तानंद
मयी शक्तचाविता शक्तवशंकरी ॥ ८८ ॥ सर्वसौंदर्यनिलया सर्वसौभाग्य
शालिनी ॥ सर्वसंभोगभवना सर्वसौख्यनिरूपिणी ॥ कुमारी शक्ति
सुखिनी कुमारी [illegible] रिणी ॥ ८९ ॥ कुमारीपूजकप्रीत्या कुमारीप्रीति
दाप्रिया ॥ कुमारीसेवकासंगा कुमारीसेवकालया ॥ ९० ॥ आनंदभैरवी
बालभैरवी वटुभैरवी ॥ श्मसानभैरवी कालभैरवी ॥ ९१ ॥ महाभैरवप
त्नी च परमानंदभैरवी ॥ पुराणंदभैरवी च उन्मत्तानंदभैरवी ॥ ९२ ॥

नं

रूपधा ९ पुरभैरवी २

८८ कुमारीपूजनप्रीता कुमारीव्रतचारिणी

[illegible]गानानंद भैरवी च अमृतानंद भैरवी ॥
का०स० [illegible] मृतानंद भैरवी ॥ शुक्लानंद भैरवी च तथा तरुण भैरवी ॥
॥९॥ १३॥ महाभयंकरी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी ॥ त्रिपुरा परमेशानी सुं
दरी पुरसुंदरी ॥ १४ ॥ त्रिपुरेशी पंचदशी पंचमी पुरवासिनी ॥ महासप्तदशी
चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ॥ १५ ॥ महांकुशस्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा ॥ न
(9) वचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥ १६ ॥ राजराजेश्वरी वीरा महा
त्रिपुरसुंदरी सिंदूरपूररुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुंदरी ॥ १७ ॥ सर्वांगसुंदरी
रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयका ॥ यवा यावक सिंदूर रक्तचंदनरूपधृक् ॥ १८ ॥ क
वरी बालकुटिलनिबिडश्यामकेशिनी ॥ वज्रमौक्तिकरत्नाढ्या किरी
टमुकुटोज्ज्वला ॥ १९ ॥ रत्नकुंडलसंयुक्तास्फुरद्गंडमनोरमा ॥ कुंजरे ॥९॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(9A)

ध्वरकुंभोत्थमुक्तारंजितनासिका ॥१००॥ मुक्ताविद्रुममाणिक्य
हाराढ्यस्तनमंडला ॥ सूर्यकांतेंदुकांताढ्यस्पर्शाश्मकंठविभूषणा ॥१०१॥
बीजपूरस्फुरद्बीजदंतपंक्तिरनुत्तमा ॥ कामकोदंडकाभुग्नभ्रूकटाक्ष
प्रवर्षिणी ॥१०२॥ मातंगकुंभ[illegible]जालसत्कोकनदेक्षणा ॥ मनोज्ञ
शष्कुलीकर्णा हंसीगतिवि[illegible]डंबिनी ॥३॥ पद्मरागांगदद्योतद्दोश्चतु
ष्कप्रकाशिनी ॥ नानामणि[illegible]स्फुरत्स्वर्णकांतिविभूषणा ॥४॥
नागेंद्रदंतनिर्माणवलयांचितपाणिनी ॥ अंगुलीयकचित्रांगी विचि
त्रक्षुद्रघंटिका ॥५॥ पट्टांबरपरिधाना कलमंजीररंजिनी ॥ कर्पूराग
रुकस्तूरीकुंकुमद्रवलेपिता ॥६॥ विचित्ररत्नपृथिवीकल्पशाखितल

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

का॰ स
॥४०॥
(१०)

लेस्थिता ॥ रत्नदीपस्फुरद्रत्नसिंहासननिवासिनी ॥ ७ ॥ षट्चक्रभेदन
परापरभानंदरूपिणी ॥ सहस्रदलपद्मांतश्चंद्रमंडलवर्तिनी ॥ ८ ॥ ब्रह्म
रूपा शिवक्रीडा नानासुखविलासिनी ॥ हरविष्णुविरंचींद्रग्रहनायकसे
सेविता ॥ ९ ॥ आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद्योनिरयोनिजा ॥ भगरूपा भ १०
गस्थाथास्त्री भगिनी भगरूपिणी भगात्मिका भगाराध्या रूपिणी भगमा
लिनी ॥ लिंगाभिधायिनी लिंगा लिंगिनी प्रियवासिनी ॥ शिवा शैवा
चरुद्राणी तथैव शिवनादिनी ॥ [illegible] ॥ मातंगी चामरी चैव तथैव च भ
गमेखला ॥ ११ ॥ डाकिनी योगिनी चैव तथा योगिनीमता ॥ माहेश्वरी
वैस्नवी चभ्रामरी शिवरूपिणी ॥ १२ ॥ अलंबुषा वेगवती क्रोधरूपा सु ॥४०॥

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com